Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

भारत द्वारा सुरक्षा की खोज

मदन कुमार वर्मा
एसो0 प्रोफेसर, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number: 291-294
Publication Issue :
September-October-2020
Article History
Accepted : 20 Sep 2020
Published : 30 Sep 2020

सारांश – चीन द्वारा भारत की रणनीतिज्ञ घेराबन्दी के विरूद्ध भारत द्वारा राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उठाया गया कदम।

मुख्यशब्द–भारत, खोज, सुरक्षा, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय।

भारत अपने सुरक्षा की खोज में सतत् प्रयासरत् है क्योंकि सन् 1991 में सोवियत संघ का विखण्डन होने भारत अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगा दूसरे ओर चीन–पाकिस्तान की रणनीतिक गठजोड़ निरंतर भारत की चिंता को बढ़ाया है। भारत की कमोवेश स्थिति वैसी बन गयी जैसे कि फ्रांस की स्थिति दोनों विश्वयुद्ध के मध्य में थी। फ्रांस अपनी सुरक्षा की खोज में यूरोप में नये शक्ति समीकरण निरंतर बना रहा था, तो दूसरी ओर बिट्रेन तुष्टीकरण की नीति जर्मन के प्रति अपनाया था, जिसमें द्वितीय विश्वयुद्ध हो गया। भारत इन वैश्विक घटनाओं से शिक्षा लेते हुए अपनी सुरक्षा को मजबूत करने का प्रयास किया है। ताकि कोई अप्रिय घटना न घटे। इसको दो भागों में बाँटकर हम अध्ययन कर सकते है।

1. भारत के विरूद्ध चीन द्वारा उठाये गये कदम
2. प्रतियुत्त्र में भारत द्वारा उठाये गये कदम।

चीन की विदेश नीति हीगल की विचारधारा का अनुसरण करती है जैसा हीगल ने कहा था, जिस प्रकार तालाब में बंधा पानी गंदा हो जाता है उसी प्रकार यदि निरंतर सेना को गतिमान न बनाये रखा जाय तो सैनिक में आलस्य व अन्य निम्न विचार घर बना लेते है। चीन अपनी इसी नीति पर चलते हुए अपने पड़ोसियों के विरूद्ध अपनी सेना को निरंतर उकसाता रहता है चाहे वे जापान, वियत नाम व भारत क्यों न

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

हो भारतचीन की इस रणनीति का सबसे बड़ा शिकार है। 05 मई 2020 को चीन–भारत के मध्य सीमा पर सैन्य संघर्ष हुआ यह घटना L.A.C. पर गलवान घाटी के पूर्वी लद्दाख में हुआ और भारत ने अपने 20 सैनिकों को 15 जून 2020 तक खो दिया। कई दौर के वार्ता के बाद चीन अपने सेना को पीछे हटाने को तैयार नहीं है। चीन की विस्तारवादी व आक्रामक रणनीति केवल यही नहीं रूकी जबकि अमेरिका व कई पाश्चात्य देशों ने चीन की निंदा की, और सलाह दिया कि चीन L.A.C. पर अपनी आक्रामक रणनीति रोके। इससे पूर्व भारत व चीन में सैन्य झड़प डोकलाम को लेकर 2017 में हो चुका हैं। डोकलाम दरअसल भूटान का हिस्सा है जिस पर चीन अपना अधिपत्य चाहता है इसमें भारत–चीन में सैन्य झड़प हो गयी। भारत पर भूटान की प्रतिरक्षा का भार है।

वास्तव में शीतयुद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत चीन एक दूसरे को रणनीतिक प्रतिद्वन्दी मानने लगे है जिससे दक्षिण ऐशिया में हिन्द महासागर क्षेत्र में चीन की गतिविधियाँ बढ़ी है जो भारत के लिए चिंता का विषय है, चीन धीरे–धीरे एक के बाद एक भारतीय पड़ोसियों से अपने सम्पर्क बढ़ाता जा रहा हैं–जैसे नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी से चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी से प्रगाढ़ सम्बन्ध है। जब भारत–चीन के साथ L.A.C. पर मई 2020 में सीमा पर संघर्षरत् था, तो नेपाल ने भारत के साथ सीमा विवाद को उठाया और नेपाल ने अपने राजनीतिक नक्शे में काला पानी, लिपुलेख और लीमपिया धुरा को नेपाल नक्शे में दिखाया जिसमें भारत व नेपाल से बीच तनाव बढ़ा। इसी प्रकार जब श्रीलंका ने चीन द्वारा लिये गये विशाल कर्ज को देने में असमर्थ हो गया तो श्रीलंका ने अपने हमबन टोटा पोर्ट को चीन को 2017 में 100 वर्ष के पट्टे पर दे दिया, जिससे भारत की चिंताए बढ़ गयी। 17–18 जनवरी 2020 को चीनी राष्ट्रपति ने म्यांमार की यात्रा की, इस यात्रा के दौरान सबसे उल्लेखनीय समझौता क्याउकर्पायू इकोनामिक जोन में चीन 1.3 विलियन का निवेश करेगा। क्याउरूर्पायू गहरे समुद्र का बन्दरगाह म्यांमार में बंगाल की खाड़ी में स्थित है, जिसने चीन की रणनीतिक उपलब्धि को बंगाल की खाड़ी में आसान बना दिया। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान का ग्वादर बंदरगाह जिसे चीन विकसित कर रहा है, इसके द्वारा भी चीन की हिन्द महासागर में उपस्थिति दर्ज की इस पोर्ट का वास्तव में रणनीतिक महत्व है यह मल्लका जलसंधि के निकट है। इसके अतिरिक्त चीन सिटवी समुद्री पोत की विकसित और प्रसार कर रहा है जो कोको द्वीप के निकट है जो हमारे अण्डमान–निकोबार को द्वीप–समूह के निकट है जिस म्यांमार ने चीन को दे दिया।

मालद्वीव जो दक्षिण–पश्चिम में श्रीलंका व भारत के पास अरेबियन समुद्र में स्थित है मालद्वीव चीन के सैन्य बेस दजीबूटी (Djibouti) और ग्वादर बंदरगाह के निकट है। मालद्वीव में चीन ने व्यापक निवेश किया है, बदले में मालद्वीव ने चीन के सिल्करूट का समर्थन किया है जो हिन्द महासागर से गुजरेगा। बांग्लादेश में चीन ने चित्तगांग बंदरगाह को व्यापारिक व नौ सैनिक उद्देश्यो के लिए प्रयोग कर रहा है।

इस प्रकार चीन के पिछले दो दशकों में हिन्द महासागर के सभी महत्वपूर्ण रणनीतिक बिन्दुओं पर अपना प्रभाव जमा लिया है, भारत को चीन के प्रतियुत्तर, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व वैश्विक स्तर पर चीन के विरूद्ध रणनीति बनानी होगी।

चीनी के प्रतियुत्तर में भारत ने अनेक कदम क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर उठाये है। भारत ने राष्ट्रीय स्तर अपनी सेनाओं का आधुनिकीकरण कर रहा है। तथा अपना परमाणु हथियार चीन व पाकिस्तान के प्रतियुत्तर में बढ़ा रहा है तथा लम्बी दूरी एवं अर्न्तमहाद्वीपीय मिसाइलों का विकास कर रहा है जैसा कि जार्ज फर्नाडीज ने भारत द्वारा किये गये परमाणु विस्फोट का कारण स्पष्ट करते हुए कहा था कि पाकिस्तान नहीं अपितू चीन हमारा दुश्मन नं0–1 है। दूसरी ओर भारत ने क्षेत्रीय स्तर पर वियत नाम, जापान व ताइवान से अपने सैनिक रणनीतिक सम्बंध बनाये है यही कारण कि वियतनाम के सर्मथन से भारत ने चीन सागर में अपने युद्ध–पोत उतारे है। ताइवान से रणनीति के सम्बन्ध बढ़ाने पर चीन तिलमिला उठा था। पर भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा मात्र स्थित वियतनाम, जापान व ताइवान के सम्बन्धों से चीन को संतुलित नहीं कर रहा है। अतः भारत अपने सुरक्षा के लिए अमेरिका से भी सम्बन्ध बढ़ाया है भारत ने अमेरिका के साथ Civil Nuclear Isolation Co-opration Agreement पर 2008 में समझौता किया। इस प्रकार भारत 34 वर्ष बाद वैश्विक नाभकीय अलगांव से मुक्त हुआ। साथ ही भारत वैश्विक स्तर चीन के साथ अपने सम्बन्धों को संतुलित करने के लिए क्वाड नाम संगठन में शामिल हुआ। चीन इस क्वाड को लेकर काफी चिंतित है, चीन ने इसे नाटो का एशियाई संस्करण कहाँ है क्वाड का पूरा नाम quadrilateral security dialogue है। जिसके सदस्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया एवं भारत है। चारों देश इण्डो–पैसेफिक क्षेत्र में आपसी सलाह और सहयोग से अपनी सुरक्षा को निश्चित करना चाहते है। क्वाड 2007 जापानी P.M. शिजो अम्बे के प्रयासों से अस्तित्व में आया। इसी वर्ष जापान ने भारत–U.S.A मालाबार नौसेना अभ्यास में भाग लिया।

इस प्रकार भारत पूर्व सोवियत संघ के सन् 1991में विघटित होने के पश्चात् भारत ने जो सुरक्षा खोज शुरू की, उसकी गति क्वाड तक आकर रूक गयी है, पर इसमें चीन की हरकतों में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है।

जब से सन् 2007 से क्वाड का गठन हुए तब से भारतीय सेना व चीनी सेना के मध्य दो बार सैन्य झड़प हो चुकी है, चीन वास्तव में बड़ा युद्ध न लड़कर स्वयं पहलकर अपने पड़ोसी के क्षेत्र में घुस जाता है और जब पड़ोसी की सेना आती है तो कुछ दूर पीछे हटकर पड़ोसी के क्षेत्र में अपनी सेना तैनात कर देता है यह चीन की पुरानी रणनीति है। दूसरे इससे चीन की सेना गतिशील बनी रहती है। इसका निदान यह है कि चीन के सारे पड़ोसियों को एक व्यापक रणनीतिक सम्बन्ध के तहत जोड़ा जाये। तभी चीनी शक्ति को इस क्षेत्र में संतुलित किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. पाश्चात्य राजनीतिक चिंतक डॉ0 तिवारी G.D.
2. दो विश्व युद्धों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध–E.H. Car
3. प्रतियोगिता दर्पण नवम्बर, दिसम्बर–2020
4. अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्ध– पंत पुष्पेष
5. दैनिक जागरण अमर उजाला
6. हिन्दुस्तान टाईम्स